रपट

विषय :– हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा

नाम:- सुप्रवी सुभाष देसाई

अनुक्रमांक :– 23P0140031

PR Number:– 201903308

गोवा विश्वविद्यालय शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य महाशाला

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्विद्यालय

15/20

31/05/24

परीक्षक:- डॉ. दीपक वरक

प्रो. श्वेता गोवेकर

GOA UNIVERSITY
TALEIGAO PLATEAU
GOA

विषय :– हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा (HIN – 675)

नाम:- सुप्रवी सुभाष देसाई

अनुक्रमांक :– 23P0140031

PR Number:– 201903308

गोवा विश्वविद्यालय शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य महाशाला

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्विद्यालय

परीक्षक:- दीपक वरक

श्वेता गोवेकर

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय
1	प्रस्तावना
2	पूर्व तयारी
3	रेल का सफर
4	पहला दिन - अक्षरधाम मंदिर
5	दूसरा दिन - इंडिया गेट ललित कला अकादेमी लोटस टेंपल हुमायूं का मकबरा बिरला मंदिर
6	तीसरा दिन - दिल्ली विश्वविद्यालय हिंदू विद्यालय जेएनयू कुतुब मीनार
7	चौथा दिन - ताज महल मथुरा राधा-कृष्ण मंदिर
8	पांचवा दिन - अग्रसेन की बावली राजघाट जामा मस्जिद लाल किला सरोजिनी नगर मार्केट
9	निष्कर्ष

प्रस्तावना

शैक्षिक भ्रमण का शिक्षा के क्षेत्र में अपना विशेष महत्व है। शैक्षिक भ्रमण से हम प्रकृति की सुन्दरता से रू-बूरू होते हैं। मानव की सुन्दर कलाकृतियों से परिचित होते है, साथ ही साथ कुदरत की कुछ रहस्यों से भी परिचित होते हैं जिसमें हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है। शैक्षिक भ्रमण में हम परोक्ष नहीं बल्कि प्रत्यक्ष रूप से देखते हैं, जिससे ज्ञान स्थायी होते हैं, साथ ही रसानुभूति की प्राप्ति होती है और नयन सुख की प्राप्ति होती है। यह मनोरंजन के माध्यम से सीखना शिक्षा का सबसे अच्छा माध्यम है।

हमारे गोवा विश्वविद्यालय शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य महाशाला, हिंदी अध्ययन शाखा से भी हम सभी प्रथम वर्ष के छात्र-छात्राएँ लगभग एक सप्ताह के लिए दिनांक 18 मार्च - 26 मार्च 2024 को शैक्षणिक भ्रमण हेतु दिल्ली, आगरा के दर्शन के लिए गए, जहाँ हमने दिल्ली में लोटस टेंपल, कुतुबमीनार, इंडिया गेट, लाल किला, राजघाट, हुमायूं का मकबरा, राष्ट्रपति भवन, बिरला मंदिर आदि देखा। आगरा में ताजमहल देखा और मथुरा में वृंदावन मंदिर के दर्शन किए।

पूर्व तयारी

किसी भी यात्रा पर जानें से पहले पूर्व तयारी की जाति है। हमारी कक्षा में कुल 37 छात्र है।सबसे पहले हमें विषय चुनने के लिए 2 विकल्प दिए गए थे। एक सर्वेक्षण और दूसरा हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा। 37 छात्रों में से 26 छात्रों ने इस हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा इस विषय को चुना। उसी दिन से सभी इस तयारी में लगे थे। यात्रा पर जानें के लिए हमने दक्षिण भारत चुना और उसमे से हमने उत्तराखंड और दिल्ली जैसे दो विकल्प दिए गए थे। तो सभी ने दिल्ली जाने के लिए राजी हो गए और दिल्ली यात्रा पर जानें के दिन का चुनाव हुआ फ़रवरी 14 तारीख, परन्तु किसी कारण वश हम उस दिन यात्रा पर नहीं जा सकें जिससे हमारी अध्ययन यात्रा पुनर्निर्धारित हुई मार्च 18 को। टिकट बुक करने में सर दीपक ने काफ़ी सहायता की। पहले के टिकट रद्द करके पुनर्निर्धारित करके यात्रा पर जानें की तारीख तय हुई 18 मार्च। दिल्ली का मौहल कैसा है, वहा पर जाकर हमें किन जगहों पर जाना है, उन जगहों का इतिहास, उनकी खासियत, वहा पर किस तरह जाना है यह सभी पहले ही जानकारी इकट्ठा कर दी थी। टिकट आरक्षण का बंदोबस्त दीपक सर और हम में से 6 छात्रों ने कर दिया था। रही बात सामान बांधने की तो हमने सभी ने मिलकर एक सूची बनाई थी, ले जाने के लिए चीजें और चीजें जो नहीं ले जानी हैं। स्वास्थ्य और सुरक्षा प्रबंधन की जांच- सूची भी बनाई गई थी। इस हफ्ते भर के लिए हमें कितने कपड़े लेने है इसकी सभी ने अपने हिसाब से खुद अपने लिए एक अलग सूची बनाई थी। इन सूची के अनुसार ही हमनें हमारा सामान बांधा।

रेल का सफ़र

हम 18 मार्च दोपहर 2.30 बजे मडगांव रेलवे स्टेशन पर इकट्ठा हुए। हमारी दिल्ली जाने वाली ट्रेन 3.30 बजे स्टेशन पर आने वाली थी परंतु वे 1.45 मिनट देरी हो चुकी थी। जिसके कारण हम सभी काफ़ी थक चुके थे। काफ़ी समय बाद ट्रेन प्लेटफ़ार्म नंबर 1 पर आई और सभी ट्रेन में चढ़ गए। ट्रेन कर्नाटक से होकर दिल्ली जाने वाली थी। हमने 2 राते ट्रेन में गुजारी।

पहला दिन (20 मार्च 2024)

20 मार्च, सुबह 5.30 बजे हम दिल्ली रेलवे स्टेशन पर पहुंच गए और वहा से 2 मेट्रो से होकर दोपहर को हमारी होटल में प्रवेश किया और सामान रखा।

उसी दिन दोपहर का खाना खाने के बाद हम मैट्रो रेल से उतरकर थोड़ा चलकर स्वामिनारायण अक्षरधाम मन्दिर गए।

स्वामिनारायण अक्षरधाम मन्दिर

भारत के नई दिल्ली में स्थापित, अक्षरधाम मंदिर वास्तुकला का एक चमत्कार है जो हजारों वर्षों की सांस्कृतिक विरासत को उजागर करता है और भगवान स्वामीनारायण जी को श्रद्धांजलि है जो हिंदू धर्म के अवतार, देवता और महान संत हैं। भव्य संरचना के निर्माण में लगभग 5 साल लग गए और 6 नवंबर, 2005 को इसका उद्घाटन किया गया। आज यमुना नदी के किनारे पर ढाँचा खड़ा है और दुनिया भर में लाखों पर्यटकों और तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है। मूल रूप से, अक्षरधाम शब्द को दो शब्दों 'अक्षर' से लिया गया है जिसका अर्थ है अनन्त और 'धाम' जिसका अर्थ है निवास, जिसका अर्थ है एक साथ परमात्मा या शाश्वत का निवास। मंदिर में प्रवेश करते हुए, हम भगवान स्वामीनारायण की 11 फीट ऊँची सोने की प्रतिमा को देख सकता था जो मंत्रमुग्ध कर देती है। आगंतुक आध्यात्मिकता से गूंजते हुए अक्षरधाम के प्रत्येक तत्व को महसूस कर सकते हैं जो हर आत्मा को संभावित रूप से दिव्य बनाता है।

इस मंदिर के अजुबाजू में तरह तरह के पेड़ पौधे लगे हैं। चीकू, संतरे के झाड़ लगे हैं। फूल तो बहुत तरह के है। मंदिर के अंदर हम कोई भी तरह के इलेक्ट्रॉनिक आइटम्स नहीं ले जा सकते हैं। गेट पर ही सबकी जांच-पड़ताल की जाती हैं और सभी को अपने इलेक्ट्रॉनिक आइटम्स गेट पर जमा करके ही अंदर जाने की अनुमति दी जाती हैं। वहा सामान रखने की सुरक्षित सुविधा भी की गई है। मंदिर की गेट पर से लेकर अंदर मंदिर में कड़ी सुरक्षा रखी गई है। इस तरह का नियम इसलिए बनाया है क्यों की मंदिर की संरचना बहुत ही अद्वितीय, अनोखी और सुंदर है और भगवान की मूर्ति सोने से जड़ी हुई है। मंदिर की दीवारों में बहुत बारीकी से नाकाशी का काम किया गया हैं। अंदर की दीवारों पर भगवान स्वामीनारायण के अवतार से जुड़ी कहानियां लिखि हुई है।

इस भव्य अक्षरधाम मन्दिर को गुलाबी, सफेद संगमरमर और बलुआ पत्थरों के मिश्रण से बनाया गया है। इस मंदिर को बनाने में स्टील, लोहे और कंक्रीट का इस्तेमाल नहीं किया गया। श्री अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था के प्रमुख स्वामी महाराज के नेतृत्व में इस मंदिर को बनाया गया था। करीब 100 एकड़ भूमि में फैले इस मंदिर को 11 हजार से ज्यादा कारीगरों की मदद से बनाया गया। पूरे मंदिर को पांच प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है। मंदिर में उच्च संरचना में 234 नक्काशीदार खंभे, 9 अलंकृत गुंबदों, 20 शिखर होने के साथ 20,000 मूर्तियां भी शामिल हैं। मंदिर में ऋषियों और संतों की प्रतिमाओं को भी स्थापित किया गया है।

अक्षरधाम मंदिर अपनी सुंदर वास्तुकला और शानदार मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध हैं। मंदिर में फ़ोन नहीं ले जाने के कारण हम वहां की खूबसूरती को तस्वीरों में नहीं खींच पाए। नीचे मैंने जो तस्वीर शामिल की है वह इंटरनेट साधन के माध्यम से ली है।

इस तरह हमने यात्रा के पहले दिन अक्षरधाम मंदिर के दर्शन किए और वापस मेट्रो स्टेशन से होकर हमारी होटल में आ गए। पहला दिन यही पर खत्म हो जाता है।

स्वामिनारायण अक्षरधाम मंदिर

ललित कला अकादेमी

लोटस टेंपल

हुमायूं का मकबरा

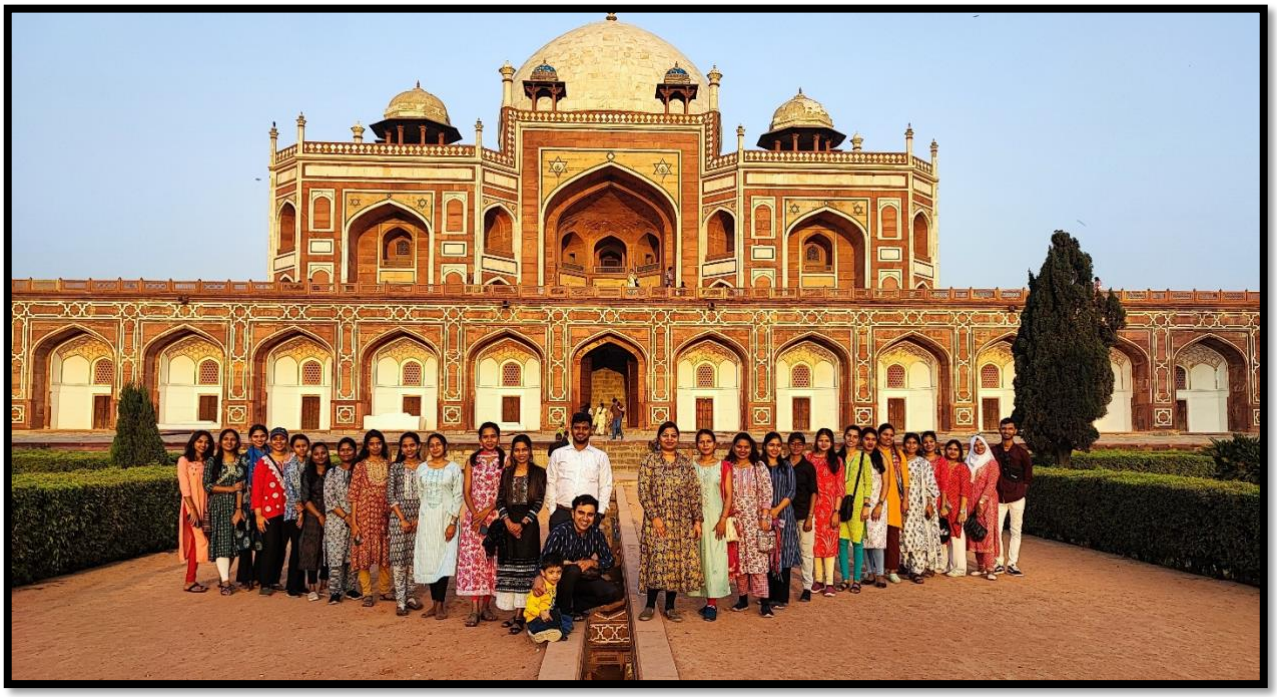

दूसरा दिन (21 मार्च 2024)

दूसरे दिन 21 मार्च की सुबह 8 बजे उठकर, चाय नाश्ता करने के बाद हम 9 बजे बस से हमारा सफर फिर से शुरू हो गया। हमारे साथ दीपक सर और स्वेता मैडम थे ही लेकिन उस दिन उन्ह दोनों के अलावा आदित्य सर भी हमारे साथ जुड़ गए।

दूसरे दिन हम इंडिया गेट, ललित कला अकादेमी, संगीत नाटक अकादेमी, लोटस टेंपल, हुमायूं का मकबरा, राष्ट्रपति भवन, बिरला मंदिर इन जगहों पर गए और वहा से जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की। इन सब जगहों का वर्णन एक-एक करके नीचे दिया गया है।

इंडिया गेट

सबसे पहले हम इंडिया गेट देखने गए। इंडिया गेट दिल्ली का ही नहीं अपितु भारत का महत्वपूर्ण स्मारक है। इंडिया गेट को 70,000 से अधिक भारतीय सैनिकों की याद में निर्मित किया गया था जिन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध में वीरगति पाई थी। यह स्मारक 42 मीटर ऊंची आर्च से सज्जित है और इसे प्रसिद्ध वास्तुकार एडविन ल्यूटियन्स ने डिज़ाइन किया था। इंडिया गेट को पहले 'अखिल भारतीय युद्ध स्मृति' के नाम से जाना जाता था। इंडिया गेट की डिज़ाइन इसके फ्रांसीसी प्रतिरूप स्मारक आर्क-डी-ट्रायोम्फ के समान है। इंडिया गेट दिल्ली के राजपथ पर स्थित है।

- **निर्माणकाल**

प्रथम विश्वयुद्ध और अफ़ग़ान युद्ध में मारे गए भारतीय जवानों की याद में 1931 में बनकर तैयार हुआ।

- **वास्तुकला**

यह इमारत लाल पत्थर से बनी है जो एक विशाल ढांचे के मंच पर खड़ी है। इसके आर्च के ऊपर दोनों ओर 'इंडिया' लिखा है। इसकी दीवारों पर 70,000 से अधिक भारतीय सैनिकों के नाम शिल्पित किए गए हैं, जिनकी याद में इसे बनाया गया है। इसके शीर्ष पर उथला गोलाकार बाउलनुमा आकार है जिसे विशेष अवसरों पर जलते हुए तेल से भरने के लिए बनाया गया था।

इंडिया गेट जिन सैनिकों की याद में बनाया गया था उनके नाम इस इमारत पर खुदे हुए हैं। इंडिया गेट की नींव 1921 में ड्यूक ऑफ़ कनॉट ने रखी थी और इसे कुछ साल बाद तत्कालीन वायसराय लॉर्ड इरविन ने राष्ट्र को समर्पित किया था। इंडिया गेट दिल्ली की महत्त्वपूर्ण इमारत है। दिल्ली आने वाले पर्यटक यहाँ अवश्य आते हैं।

शहीद सैनिकों की स्मृति में यहाँ एक राइफ़ल के ऊपर सैनिक की टोपी रखी गयी है जिसके चार कोनों पर सदैव 'अमर जवान ज्योति' जलती रहती है। इसकी दीवारों पर उन हज़ारों शहीद सैनिकों के नाम हैं।

वहां पर सैनिकों के नाम पढ़ते समय मेरे मन में एक अलग सी स्फूर्ति , अलग सा जोश निर्माण हो गया था। देश के लिए अपनी जान कुर्बान करने वाले सैनिकों के प्रति आदर, सम्मान का भाव जो था वह और भी बढ़ गया था। उनके घरवालों के प्रति संवेदना उमड़ रही थी। मन कहने लगा कि किस तरह उन्ह लोगों के अंदर इतना धैर्य आ जाता है कि उनके लिए केवल अपना देश के प्रति कर्तव्य ही सर्वपरी है, वे देश के लिए लड़कर अपनी जान तक कुर्बान कर देते हैं।

वहां की कुछ दीवारों पर गोवा मुक्ति, भारत स्वतंत्रता आंदोलन, भारत के नक्शे आदि के बारे में लिखा गया है।

ललित कला अकादेमी

इंडिया गेट देखने के बाद हम 'ललित कला अकादेमी' दिल्ली गए। वहां पर एक संग्रहालय है। उसमें हमने अलग अलग प्रकार के नए पुराने संगीत वाद्ययंत्र देखे। वहा के एक सर से हमने बातचीत भी की और संग्रहालय के बारे में जानकारी हासिल की और कौनसे संगीत वाद्ययंत्र कहां से लाए गए, कहां उनका निर्माण हुआ, भारत के कौनसे राज्य में इन्हे बजाया जाता है, या उपयोग जाता था, किस अवसर पर उन्हें बजाया जाता है, किन्ह वस्तुओ के उपयोग से वह बने हैं, उनकी क्या खासियत है, उन वस्तुओं को नाम कैसे दिया गया और उनसे जुड़े अलग-अलग प्रश्नों के जवाब हमें मिले।

ललित कला अकादेमी में इन सभी संगीत वाद्ययंत्र रखने का उनका उद्देश्य था। वे चाहते हैं की जो कलाएं या संगीत वाद्ययंत्र लुप्त होते जा रहे हैं उन्हें संभालकर रखना। हमारे पास कलाओं की कमी नही है। वे चाहते है की किस प्रकार से इनमें बदलाव होता चला गया यह आज की पीढ़ी को समझ में आए। हाथ, ओंठ, पैर, उंगलियों से बजाने वाले संगीत वाद्ययंत्र वहा रखें हुए थे। साप के आकार जैसे, हाथी के दांतो से बने, सिंग से बने, मोर की आकार जैसे, lizard के चमड़े से बने ढोल, नगारे आदि संगीत वाद्ययंत्र वहा पर सुरक्षित रखे हुए है जो की बहुत ही प्राचीन काल के है।

ललित कला अकादेमी में एक पुस्तकालय है। वहां हर विषय से जुड़े इतिहास, भाषा पर कई सारी पुस्तके है। ललित कला अकादेमी से पुस्तक प्रकाशन भी होते हैं। यहां से नाटक की पत्रिकाएं प्रकाशित होती है, जिसमें से कुछ नाम है - 1. गगनांचल, 2. कलावासुदा- प्रदर्शकरी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका, 3. नटरंग, 4. इष्टावार्ता- कलाओं की खबरनामा, 5. छायानट, 6.संगीत नाटक (अंग्रेजी), 7. स्वर सरिता- कला, संस्कृति और पर्यटन को समर्पित मासिक पत्रिका, 8.छायानट- पुतुल कला विशेषोंक संस्कृति, 9. रंगप्रसंग- राष्ट्रीय नाट्यविद्यालय का मुख्य पत्र। हम यहां से पुस्तकें खरीद भी सकते हैं।

ललित कला अकादेमी में भारत देश के राज्यों में खेलें जाने वाला दशावतारी नाटक के मुखौटे प्रदर्शित किए हुए हैं। श्री गणेश भगवान के मुखौटे, रावण के 10 रूपों के मुखौटे, श्री कृष्ण के मुखौटे, श्री राम के रूपों के मुखौटे आदि प्रदर्शित किए गए हैं। इसी के साथ नृत्य, नाटक से जुड़े चेहरे के भाव के मुखौटे भी वहां प्रदर्शित किए गए हैं।

लोटस टेंपल

ललित कला अकादेमी के बाद हम लोटस टेंपल गए। हमें घूमने जाने के लिए बस सेवा प्रदान की गई थी। लोटस टेंपल एक मनमोहक आकृति है। कमल के समान बनी इस मंदिर की आकृति को देखकर मन प्रसन्न और शांत सा हो जाता है। मंदिर के ठीक सामने एक तालाब है, उसे देखकर ऐसा लगता है कि जैसे नीले पानी में सफ़ेद कलम खिला हो। उस दृश्य को देखकर ही मन प्रफुल्लित हो जाता है। एक line में खड़े होकर हमें रखा गया और इस आकृति की थोड़ी-बहुत जानकारी हिंदी और अंग्रेज़ी दोनो भाषाओं में दी गई। मंदिर के अंदर काफ़ी शांत और प्रसन्न मौहाल था। जो कोई व्यक्ति मानसिक तनाव मेहसूस कर रहा है उस व्यक्ति को अमन,चैन मिल सकता है।

दिल्ली के नेहरू प्लेस में स्थित लोटस टेंपल एक बहाई उपासना मंदिर है, जहां न ही कोई मूर्ति है और न ही किसी प्रकार का पूजा पाठ किया जाता है। लोग यहां आते हैं शांति और सुकून का अनुभव करने। कमल के समान बनी इस मंदिर की आकृति के कारण इसे लोटस टेंपल कहा जाता है। इसका निर्माण सन 1986 में किया गया था। यही वजह है कि इसे 20वीं सदी का ताजमहल भी कहा जाता है।

भारतीय परंपराओं में कमल को शांति और पवित्रता के सूचक और ईश्वर के अवतार के रूप में देखा जाता है। मंदिर का वास्तु पर्शियन आर्किटेक्ट फरीबर्ज सहबा द्वारा तैयार किया गया था। दुनिया भर में आधुनिक वास्तुकला के नमूनों में से एक लोटस टेंपल भी है। इसका निर्माण बहा उल्लाह ने करवाया था, जो कि बहाई धर्म के संस्थापक थे। इसलिए इस मंदिर को बहाई मंदिर भी कहा जाता है। बावजूद यह मंदिर किसी एक धर्म के दायरे में सिमटकर नहीं रह गया। यहां सभी धर्म के लोग आते हैं और शांति और सूकून का लाभ प्राप्त करते हैं। इसके निर्माण में करीब 1 करोड़ डॉलर की लागत आई थी। मंदिर आधे खिले कमल की आकृति में संगमरमर की 27 पंखुड़ियों से बनाया गया है, जो कि 3 चक्रों में व्यवस्थित हैं। मंदिर चारों ओर से 9 दरवाजों से घिरा है और बीचोंबीच एक बहुत बड़ा हॉल स्थित है। जिसकी ऊंचाई 40 मीटर है इस हॉल में करीब 2500 लोग एक साथ बैठ सकते हैं।

हुमायूं का मकबरा

लोटस टेंपल से लौटने के बाद हम हुमायूं का मकबरा देखने चले गए। यह खूबसूरत मकबरा मुगल सम्राट हुमायूं की याद में उनकी पहली पत्नी हाजी बेगम द्वारा निर्मित करवाया गया था। अगर आप दिल्ली की खूबसूरती को गहराई से परखना चाहते हैं तो आपको एक बार हुमायूं के मकबरे की ओर रूख जरूर करना चाहिए।

हाजी बेगम ने हुमायूं की मृत्यु के नौ साल बाद 1565 में इस मकबरे का निर्माण कार्य शुरू करवाया था, जो 1572 ई में पूरा हुआ। लाल बलूआ पत्थर और सफेद संगमरमर पत्थरों से बने इस मकबरे को उस समय लगभग 15 लाख रुपये की लागत में बनवाया गया था और इसकी संरचना इस्लामिक और फारसी वास्तुकला का मिश्रण है। हुमायूं के मकबरे की शोभा तब बढ़ी, जब 1993 में यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में इसे शामिल किया गया।दिल्ली स्थित हुमायूँ का मकबरा महान मुगल वास्तुकला का बेहतरीन नमूना है। यह भारतीय, फारसी और तुर्की स्थापत्य शैली का मिश्रण था।

विभिन्न प्रकार की इमारतें, जैसे- राजसी द्वार (प्रवेश द्वार), किले, मकबरे, महल, मस्जिद, सराय आदि इसकी विविधता थी। इस शैली में अधिकतर लाल बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर का प्रयोग किया जाता था। इस शैली में विशिष्ट विशेषताएँ हैं जैसे-मकबरे की चारबाग शैली, स्पष्ट बल्बनुमा गुंबद, कोनों पर पतले बुर्ज, चौड़े प्रवेश द्वार, सुंदर सुलेख, अरबी और स्तंभों तथा दीवारों पर ज्यामितीय पैटर्न एवं स्तंभों पर समर्थित महल हॉल आदि थी। मेहराब, छतरी और विभिन्न प्रकार के गुंबद भारत-इस्लामी वास्तुकला में बेहद लोकप्रिय हो गए तथा मुगलों के शासन के तहत इसे और विकसित किया गया। हुमायूँ की कब्र के अलावा उसकी बेगम हमीदा बानो तथा बाद के सम्राट शाहजहां के ज्येष्ठ पुत्र दारा शिकोह और कई उत्तराधिकारी मुगल सम्राट जहांदर शाह, फर्रुख्शियार, रफी उल-दर्जत, रफी उद-दौलत एवं आलमगीर द्वितीय आदि की कब्रें स्थित हैं।

लक्ष्मी नारायण मंदिर

इसके उपरांत हम लक्ष्मी नारायण मंदिर गए। मंदिर के अंदर हमें कोई भी electronic items नहीं ले जाने दिए। मंदिर के मुख्य बरामदे में लक्ष्मी नारायण की भव्य मूर्ति स्थापित है। भारत के हिंदू धर्म के अन्य देवी–देवताओं की मूर्तिया भी इस मंदिर में है जैसे- श्री गणेश, भगवान हनुमान आदि। इस मंदिर को बिरला मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी को समर्पित यह मंदिर दिल्ली के प्रमुख मंदिरों में से एक है। इसका निर्माण १९३८ में हुआ था और इसका उद्घाटन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने किया था। बिड़ला मंदिर अपने यहाँ मनाई जाने वाली जन्माष्टमी के लिए भी प्रसिद्ध है।

इन सभी जगहों पर घूमकर आने के बाद हम वापस हमारी होटल में आए और इसी के साथ हमारी यात्रा का दूसरा दिन खत्म हुआ।

तीसरा दिन (22 मार्च 2024)

22 मार्च, की सुबह जल्दी उठकर, चाय नाश्ता करके हम बस में बैठ गए। हमें हर दिन किन जगहों पर जाना है उसकी सूची दी गई थी। तो यात्रा के तीसरे दिन हम जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, हिंदू विद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय और कुतुब मीनार जाने वाले थे।

सबसे पहले हम बस से उतरकर जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय गए और हमें उस विश्वविद्यालय की गेट तक जाकर रोक दिया। बहुत देर उसी गेट पर रुके लेकिन हमें अंदर नहीं जाने दिया। वहां पर हमारा लगभग 1 घंटा बरबाद हो गया और अंदर जाने भी नही मिला।

इसके बाद हम फिर से बस में चढ़े और दिल्ली विश्वविद्यालय गए। होली के त्योंहार के कारण उस दिन सभी विश्वविद्यालयों में छुट्टी थी। फिर भी हमें दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में जाने का, उनके अध्ययनकक्ष देखने का अवसर मिला। हिंदी विभाग के सर ने हमें कुछ जानकारी भी दी। उन्होंने बताया कि उनके छात्रों द्वारा, छात्रों के लिए कुछ पत्रिकाएं प्रकाशित की जाती हैं जिन्हें वे बाहर सूचना पट्ट पर प्रदर्शित करते हैं। उस सूचना पट्ट का नाम भी संहिता दिया गया है। केवल हिंदी विभाग के छात्र ही नही बल्कि उनके साथ संस्कृत, अंग्रेजी आदि के छात्रों द्वारा भी कविताएं, कहानियां, निबंध आदि लिखे जाते उन्हें वे प्रदर्शित करते हैं।

हिंदू विद्यालय

हिंदू कॉलेज की स्थापना स्वर्गीय “श्री कृष्ण दासजी” ने सन् 1899 में की थी। इस कॉलेज में पढ़े छात्रों का एक भूतपूर्व छात्र तख़्ता है। उसे देखकर हमे पता चला की यहाँ से शिक्षा प्राप्त किए हुए विद्यार्थियों ने अकादमिक, प्रशासनिक, साहित्यिक, कॉरपोरेट सेक्टर, मीडिया रंगमंच और सिनेमा के क्षेत्रों में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी सार्थक पहचान बनाई है। कॉलेज के बारे में कहते हुए उन शिक्षकों के चेहरों पर एक अलग सी चमक थी, खुशी, आनंद था।

हिंदू कॉलेज का हिंदी विभाग विश्वविद्यालय के सबसे पुराने और प्रतिष्ठित विभागों में से एक है, जिसमें स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर तक अध्यापन होता है। विभाग तीन पत्रिकाओं का प्रकाशन करता है, जिनमें से दो ‘लहर’ एवं ‘अभिव्यक्ति’ भित्ति पत्रिकाएँ हैं। ‘हस्ताक्षर’ विभाग की अर्धवार्षिक हस्तलिखित पत्रिका है, जिसकी एक राष्ट्रीय पहचान है। इसके अतिरिक्त ‘अभिरंग’ विभाग की नाट्य-संस्था है जो विद्यार्थियों की अभिनय-क्षमता के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व के विकास में एक रचनात्मक भूमिका निभाती है।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की स्थापना 1969 में संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। इसका नाम भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के नाम पर रखा गया है। गोपालस्वामी पार्थसारथी इसके पहले कुलपति थे। प्रो मूनिस रज़ा संस्थापक अध्यक्ष और रेक्टर थे। तत्कालीन शिक्षा मंत्री एमसी छागला ने 1 सितंबर 1995 को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए बिल राज्य सभा में रखा था। इसके बाद हुई चर्चा के दौरान, संसद सदस्य भूषण गुप्ता ने राय व्यक्त की कि यह एक और विश्वविद्यालय नहीं होना चाहिए। वैज्ञानिक समाजवाद सहित नए संकायों का निर्माण किया जाना चाहिए और एक चीज़ जो इस विश्वविद्यालय को सुनिश्चित करनी चाहिए, वह है अच्छे विचारों को ध्यान में रखना और समाज के कमजोर वर्गों के छात्रों तक पहुंच प्रदान करना। जेएनयू विधेयक 16 नवंबर 1966 को लोकसभा में पारित किया गया था और जेएनयू अधिनियम 22 अप्रैल 1969 को लागू हुआ था। इंडियन स्कूल और इंटरनेशनल स्टडीज को जून 1970 में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के साथ मिला दिया गया था। विलय के बाद उपसर्ग “इंडियन” को नाम से हटा दिया गया और यह जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय का स्कूल और इंटरनेशनल स्टडीज बन गया।

जेएनयू का डॉ.बी.आर आंबेडकर केंद्रीय पुस्तकालय एक विशाल पुस्तकालय है, जो की 9 मंजिला भवन में स्थापित है। हम इस पुस्तकालय के हिंदी section में गए थे। इस पुस्तकालय में 5 लाख से अधिक पुस्तकें हैं, विभिन्न भाषाओं के समाचार पत्र, विभिन्न विषयों की अनुसंधान पत्रिकाएं एवं शोधार्थी द्वारा जमा किए गए थीसिस एवं डिसर्टेशन, विभिन्न विषयों के डेटाबेस, गवर्नमेंट डॉक्युमेंट्स, यूएन डॉक्युमेंट्स आदि उपलब्ध है। यह पुस्तकालय पूर्णतः कंप्यूटरीकृत एवं वातानुकूलित है। जेएनयू के बाद हम कुतुब मीनार देखने चले गए।

कुतुब मीनार

भारत में बहुत सी अद्भुत ईमारते हैं जिनमें से एक कुतुब मीनार है। कुतुब मीनार भारत की राजधानी दिल्ली के दक्षिण में महरौली भाग में स्थित है। कुतुब मीनार का निर्माण गुलाम वंश के शासक 'कुतुबुद्दीन ऐबक' द्वारा 12 वीं शताब्दी में प्रारंभ हुआ था। परंतु यह मीनार उसके शासन काल में पूरी नहीं हो सकी जिसकी वजह से इसके उत्तराधिकारी इल्तुतमिश ने कुतुब मीनार का निर्माण पूरा किया था। कुतुब मीनार (जिसे कतब मीनार भी कहा जाता है) प्रसिद्ध भारतीय ऐतिहासिक स्मारक है, जो भारत की दूसरी सबसे बड़ी मीनारों में (पहली मीनार फतेह बुर्ज (चप्पड़ चिड़ी, मौहाली) है, 100 मीटर लम्बी) में गिनी जाती है।

कुतुब मीनार एक भारतीय ऐतिहासिक स्मारक है, जो भारत के अन्य ऐतिहासिक स्मारकों के बीच एक प्रमुख आकर्षण के रूप में अकेला खड़ा है। कुतुब का अर्थ न्याय का स्तम्भ है। कुतुब मीनार दुनिया की सबसे बड़ी और प्रसिद्ध टावरों में से एक बन गई है। यह यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों में सूचीबद्ध की गई है। यह मुगल वास्तुकला की उत्कृष्ट कृति का एक बड़ा उदाहरण है। यह एक 73 मीटर लम्बी, 13वीं सदी की स्थापित्व शैली (इंडो-इस्लामिक वास्तुकला) में लाल बलुआ पत्थर से बनी मीनार है।

- **कुतुब मीनार की विशेषता**

इस मीनार को सबसे ऊंचे गुंबद वाली मीनार भी कहा जाता है। इस पर ज्यादातर लाल रंग के बलुआ पत्थर का प्रयोग किया गया है। यह 12वीं और 13वीं सदी में कुतुब-उद्दीन ऐबक और उसके उत्तराधिकारियों द्वारा राजपूतों के ऊपर मुहम्मद गौरी की जीत का जश्न मनाने के लिए निर्मित की गई थी। इससे पहले, यह तुर्क-अफगान साम्राज्य और इस्लाम की सैन्य शक्ति का प्रतीक थी।

13वीं सदी की शुरुआत में दिल्ली से कुछ किलोमीटर दक्षिण में निर्मित, कुतुब मीनार की लाल बलुआ पत्थर की मीनार 72.5 मीटर ऊंची है, जो अपने शिखर पर 2.75 मीटर व्यास से लेकर आधार पर 14.32 मीटर तक पतली है, और बारी-बारी से कोणीय और गोल फ़्लूटिंग करती है। आसपास के पुरातात्विक क्षेत्र में अंत्येष्टि भवन हैं, विशेष रूप से शानदार अलाई-दरवाजा गेट, जो इंडो-मुस्लिम कला की उत्कृष्ट कृति है (1311 में निर्मित), और दो मस्जिदें, जिनमें कुव्वतुल-इस्लाम भी शामिल है, जो उत्तरी भारत में सबसे पुरानी है, जो सामग्री से बनी है। लगभग 20 ब्राह्मण मंदिरों से पुन: उपयोग किया गया।

कुतुब मीनार परिसर में मस्जिदों, मीनारों और अन्य संरचनाओं का समूह 12वीं शताब्दी में पहली बार भारतीय उपमहाद्वीप में अपनी शक्ति स्थापित करने के बाद इस्लामी शासकों की वास्तुकला और कलात्मक उपलब्धियों का एक उत्कृष्ट प्रमाण है। नई दिल्ली के दक्षिणी किनारे पर स्थित यह परिसर, विशिष्ट भवन प्रकारों और रूपों की शुरूआत के साथ भारत को दार-अल-हर्ब से दार-अल-इस्लाम में बदलने की नए शासकों की आकांक्षा को दर्शाता है।

कुतुब मीनार की सुंदरता, उसका इतिहास जानकर, वास्तुकला हो बारीकी से निहारकर हम वापस हमारी होटल पहुंचे और तीसरा दिन वही से ख़त्म हो जाता है।

राजघाट महात्मा गांधी का स्मारक

राजघाट संग्रहालय

दिल्ली विश्वविद्यालय

हिंदू कॉलेज

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

सरोजिनी नगर मार्केट

कुतुब मीनार

चौथा दिन (23 मार्च 2024)

अगले दिन, 23 मार्च की सुबह जल्दी उठकर हम 4.30 बजे बस से आगरा जाने के लिए निकल चुके थे। नई दिल्ली से आगरा का सफ़र बड़ा लंबा था। दिल्ली भारत की राजधानी होने के कारण वहां के हाईवे पर जगह जगह पर चेक-पोस्ट थे। बीच में एक ढाबे पर चाय नाश्ता करने के लिए रुके और वापस आगरा का सफ़र शुरू हुआ, और लगभग दोपहर 11 बजे हम आगरा ताज महल पहुंच गए। पार्किंग व्यवस्था से ताजमहल थोड़ा दूर था जहां केवल वहां के वाहन चालकों के साथ ही जा सकते थे, हमारी बस लेकर नही जा सकते थे। वहां पर एक गाइड से हमारी बातचीत हुई और उन्होंने हमें पूरा ताजमहल घुमाया साथ ही वहां के बारे में जानकारी भी उपलब्ध करवाई।

<u>ताजमहल</u>

ताजमहल भारतीय शहर आगरा में यमुना नदी के दक्षिण तट पर एक हाथीदांत-सफेद संगमरमर का मकबरा है। इसे 1632 में मुगल सम्राट शाहजहां द्वारा अपनी पसंदीदा पत्नी मुमताज महल की मकबरे के लिए शुरू किया गया था। मकबरा 17-हेक्टेयर (42 एकड़) परिसर का केंद्रबिंदु है, जिसमें एक मस्जिद और एक गेस्ट हाउस शामिल है, और इसे तीन तरफ एक अनियंत्रित दीवार से घिरा औपचारिक उद्यान में स्थापित किया गया है। मकबरे का निर्माण अनिवार्य रूप से 1643 में पूरा किया गया था लेकिन परियोजना के अन्य चरणों में काम 10 वर्षों तक जारी रहा। माना जाता है कि ताजमहल कॉम्प्लेक्स 1653 में लगभग 32 मिलियन रूपये होने के अनुमानित लागत पर पूरी तरह से पूरा हो चुका है, जो 2015 में लगभग 52.8 बिलियन रुपये (यूएस $ 827 मिलियन) होगा। निर्माण परियोजना ने सम्राट, उस्ताद अहमद लाहौरी के लिए अदालत के वास्तुकार के नेतृत्व में आर्किटेक्ट्स के बोर्ड के मार्गदर्शन में लगभग 20,000 कारीगरों को रोजगार दिया।

ताजमहल को 1983 में यूनेस्को की विश्व विरासत स्थल के रूप में नामित किया गया था, "भारत में मुस्लिम कला का गहना और दुनिया की विरासत की सार्वभौमिक प्रशंसनीय कृतियों में से एक"। इसे कई लोगों ने मुगल वास्तुकला का सर्वोत्तम उदाहरण और भारत के समृद्ध इतिहास का प्रतीक माना है। ताजमहल सालाना 7-8 मिलियन आगंतुकों को आकर्षित करता है। 2007 में, इसे विश्व के नए 7 आश्चर्य (2000-2007) पहल का विजेता घोषित किया गया था।

मुगल सम्राट शाहजहां के समय में मुगल वास्तुकला अपने चरम शिखर पर थी, ताजमहल उन सभी वास्तुकलाओं के उदाहरण में सर्वप्रसिद्ध है। ताजमहल मुग़ल वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है। इसकी वास्तु-शैली फ़ारसी,तुर्क, भारतीय और इस्लामी वास्तुकला के घटकों का अनोखा सम्मिलन है। सन् १९८३ में, ताजमहल युनेस्को विश्व धरोहर स्थल बना। इसके साथ ही इसे विश्व धरोहर के सर्वत्र प्रशंसा पाने वाली, अत्युत्तम मानवी कृतियों में से एक बताया गया। ताजमहल को भारत की इस्लामी कला का रत्न भी घोषित किया गया है। साधारणतया देखे गये संगमर्मर की सिल्लियों की बडी- बडी पर्तो से ढंक कर बनाई गई इमारतों की तरह न

बनाकर इसका श्वेत गुम्बद एवं टाइल आकार में संगमर्मर से ढंका है। केन्द्र में बना मकबरा अपनी वास्तु श्रेष्ठता में सौन्दर्य के संयोजन का परिचय देते हैं। ताजमहल इमारत समूह की संरचना की खास बात है, कि यह पूर्णतया सममितीय है। इसका निर्माण सन् १६४८ के लगभग पूर्ण हुआ था। उस्ताद अहमद लाहौरी को प्रायः इसका प्रधान रूपांकनकर्ता माना जाता है। ताजमहल के निर्माण में लगभग २२ वर्षों का समय लगा।

- **वास्तु कला**

ताज महल का केन्द्र बिंदु है, एक वर्गाकार नींव आधार पर बना श्वेत संगमर्मर का मक़बरा। यह एक सममितीय इमारत है, जिसमें एक ईवान यानि अतीव विशाल वक्राकार (मेहराब रूपी) द्वार है। इस इमारत के ऊपर एक वृहत गुम्बद सुशोभित है। अधिकतर मुग़ल मक़बरों जैसे, इसके मूल अवयव फ़ारसी उद्गम से हैं। इसका मूल-आधार एक विशाल बहु-कक्षीय संरचना है। यह प्रधान कक्ष घनाकार है, जिसका प्रत्येक किनारा 55 मीटर है (देखें: तल मानचित्र, दांये)। लम्बे किनारों पर एक भारी-भरकम पिश्ताक, या मेहराबाकार छत वाले कक्ष द्वार हैं। यह ऊपर बने मेहराब वाले छज्जे से सम्मिलित है। मुख्य मेहराब के दोनों ओर,एक के ऊपर दूसरा शैलीमें, दोनों ओर दो-दो अतिरिक्त पिश्ताक़ बने हैं। इसी शैली में, कक्ष के चारों किनारों पर दो-दो पिश्ताक (एक के ऊपर दूसरा) बने हैं। यह रचना इमारत के प्रत्येक ओर पूर्णतया सममितीय है, जो कि इस इमारत को वर्ग के बजाय अष्टकोण बनाती है, परंतु कोने के चारों भुजाएं बाकी चार किनारों से काफी छोटी होने के कारण, इसे वर्गाकार कहना ही उचित होगा। मकबरे के चारों ओर चार मीनारें मूल आधार चौकी के चारों कोनों में, इमारत के दृश्य को एक चौखटे में बांधती प्रतीत होती हैं। मुख्य कक्ष में मुमताज महल एवं शाहजहाँ की नकली कब्रें हैं। ये खूब अलंकृत हैं, एवं इनकी असल निचले तल पर स्थित है। मकबरे पर सर्वोच्च शोभायमान संगमर्मर का गुम्बद (देखें बांये), इसका सर्वाधिक शानदार भाग है। इसकी ऊँचाई लगभग इमारत के आधार के बराबर, 35 मीटर है और यह एक 7 मीटर ऊँचे बेलनाकार आधार पर स्थित है। यह अपने आकारानुसार प्रायः प्याज-आकार (अमरूद आकार भी कहा जाता है) का गुम्बद भी कहलाता है। इसका शिखर एक उलटे रखे कमल से अलंकृत है। यह गुम्बद के किनारों को शिखर पर सम्मिलन देता है।

गुम्बद के आकार को इसके चार किनारों पर स्थित चार छोटी गुम्बदाकारी छतरियों (देखें दायें) से और बल मिलता है। छतरियों के गुम्बद, मुख्य गुम्बद के आकार की प्रतिलिपियाँ ही हैं, केवल नाप का फर्क है। इनके स्तम्भाकार आधार, छत पर आंतरिक प्रकाश की व्यवस्था हेतु खुले हैं। संगमर्मर के ऊँचे सुसज्जित गुलदस्ते, गुम्बद की ऊँचाई को और बल देते हैं। मुख्य गुम्बद के साथ-साथ ही छतरियों एवं गुलदस्तों पर भी कमलाकार शिखर शोभा देता है। गुम्बद एवं छतरियों के शिखर पर परंपरागत फारसी एवं हिंदू वास्तु कला का प्रसिद्ध घटक एक धात्विक कलश किरीटरूप में शोभायमान है। मुख्य गुम्बद के किरीट पर कलश है (देखें दायें)। यह शिखर कलश आरंभिक 1800ई० तक स्वर्ण का था और अब यह कांसे का बना है। यह किरीट-कलश फारसी एवं हिंन्दू वास्तु कला के घटकों का एकीकृत संयोजन है। यह हिन्दू मन्दिरों के शिखर पर भी पाया जाता है। इस कलश पर चंद्रमा बना है, जिसकी नोक स्वर्ग की ओर इशारा करती हैं। अपने नियोजन के कारण चन्द्रमा एवं कलश की

नोक मिलकर एक त्रिशूल का आकार बनाती हैं, जो कि हिन्दू भगवान शिव का चिह्न है। मुख्य आधार के चारो कोनों पर चार विशाल मीनारें (देखें बायें) स्थित हैं। यह प्रत्येक 40 मीटर ऊँची है। यह मीनारें ताजमहल की बनावट की सममितीय प्रवृत्ति दर्शित करतीं हैं। यह मीनारें मस्जिद में अज़ान देने हेतु बनाई जाने वाली मीनारों के समान ही बनाईं गईं हैं। प्रत्येक मीनार दो-दो छज्जों द्वारा तीन समान भागों में बंटी है। मीनार के ऊपर अंतिम छज्जा है, जिस पर मुख्य इमारत के समान ही छतरी बनी हैं। इन पर वही कमलाकार आकृति एवं किरीट कलश भी हैं। इन मीनारों में एक खास बात है, यह चारों बाहर की ओर हलकी सी झुकी हुईं हैं, जिससे कि कभी गिरने की स्थिति में, यह बाहर की ओर ही गिरें, एवं मुख्य इमारत को कोई क्षति न पहुँच सके। ताजमहल का बाहरी अलंकरण, मुगल वास्तुकला का उत्कृष्टतम उदाहरण हैं। जैसे ही सतह का क्षेत्रफल बदलता है, बडे पिश्ताक का क्षेत्र छोटे से अधिक होता है और उसका अलंकरण भी इसी अनुपात में बदलता है। अलंकरण घटक रोगन या गचकारी से अथवा नक्काशी एवं रत्न जड़ कर निर्मित हैं। इस्लाम के मानवतारोपी आकृति के प्रतिबन्ध का पूर्ण पालन किया है। अलंकरण को केवल सुलेखन, निराकार, ज्यामितीय या पादप रूपांकन से ही किया गया है।

ताजमहल में पाई जाने वाले सुलेखन फ्लोरिड थुलुठ लिपि के हैं। ये फारसी लिपिक अमानत खां द्वारा सृजित हैं। यह सुलेख जैस्पर को श्वेत संगमर्मर के फलकों में जड़ कर किया गया है। संगमर्मर के सेनोटैफ पर किया गया कार्य अतीव नाजुक, कोमल एवं महीन है। ऊँचाई का ध्यान रखा गया है। ऊँचे फलकों पर उसी अनुपात में बडा़ लेखन किया गया है, जिससे कि नीचे से देखने पर टेढा़पन ना प्रतीत हो। पूरे क्षेत्र में कुरान की आयतें, अलंकरण हेतु प्रयोग हुईं हैं। हाल ही में हुए शोधों से ज्ञात हुआ है, कि अमानत खाँ ने ही उन आयतों का चुनाव भी किया था। फरवरी के महीने में ताज महल में मुगल बादशाह शाहजहां और उनकी बेगम मुमताज का उर्स होता है,उसी समय ताज महल का यह रहस्यमयी तहखाना खोला जाता है।

ताजमहल देखने के बाद हम मथुरा राधा-कृष्ण मंदिर के दर्शन करने गए।

चौथे दिन हम काफ़ी थक चुके थे। बहुत लंबा सफ़र करके हम वापस होटल पहुंच गए। इस दिन हम केवल दो ही जगहों पर जा पाए — ताजमहल और राधा-कृष्ण मंदिर।

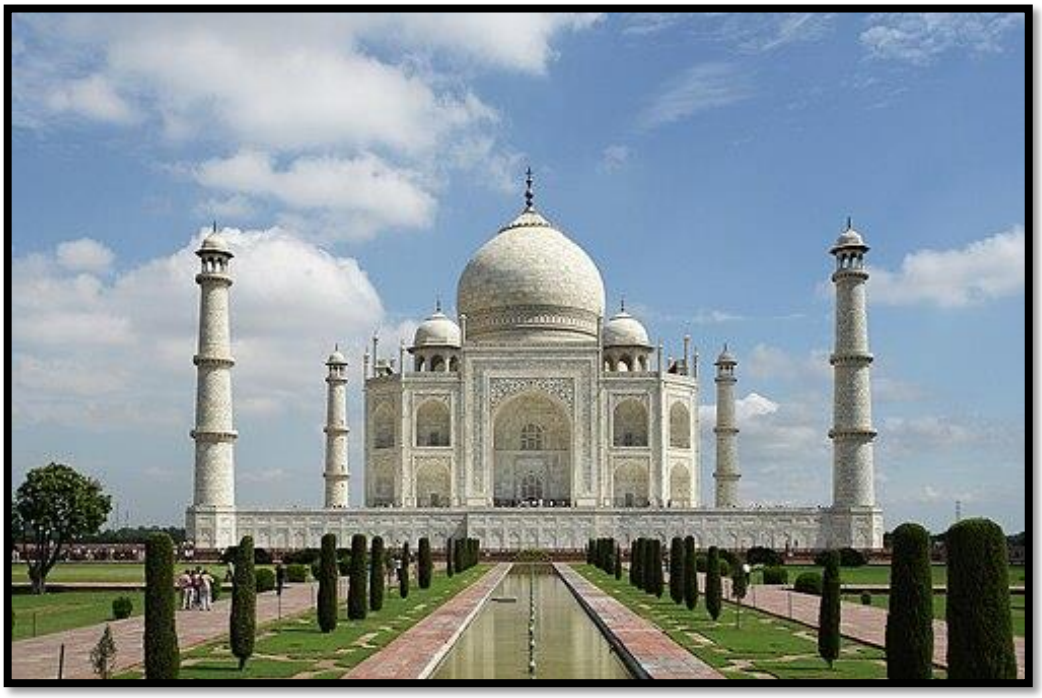

ताज महल

पांचवा दिन (24 मार्च 2024)

अगले दिन 24 मार्च को हम राजघाट, अग्रसेन की बावली, लाल किला और शॉपिंग करने के लिए जाने वाले थे। सभी जल्दी तयार होकर निकल गए।पांचवे दिन हम सबसे पहले 'अग्रसेन की बावली' इस स्थान पर गए।

अग्रसेन की बावली

अग्रसेन की बावली, एक संरक्षित पुरातात्विक स्थल हैं जो नई दिल्ली में कनॉट प्लेस के पास स्थित है।इस बावड़ी में सीढ़ीनुमा कुएं में करीब 105 सीढ़ीयां हैं। 14वीं शताब्दी में महाराजा अग्रसेन ने इसे बनाया था। सन 2012 में भारतीय डाक अग्रसेन की बावड़ी पर डाक टिकट जारी किया गया। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) और अवशेष अधिनियम 1958 के तहत भारत सरकार द्वारा संरक्षित हैं। इस बावड़ी का निर्माण लाल बलुए पत्थर से हुआ है। अनगढ़ तथा गढ़े हुए पत्थर से निर्मित यह दिल्ली की बेहतरीन बावलियों में से एक है।क़रीब 60 मीटर लंबी और 15 मीटर ऊंची इस बावली के बारे में विश्वास है कि महाभारत काल में इसका निर्माण कराया गया था। यह दिल्ली की उन गिनी चुनी बावड़ीयों में से एक है, जो अभी भी अच्छी स्थिति में हैं। जंतर मंतर के निकट, हेली रोड पर यह बावड़ी मौजूद है। यहाँ पर नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली के लोग कभी तैराकी सीखने के लिए आते थे।

बावड़ी की स्थापत्य शैली उत्तरकालीन तुग़लक़ तथा लोदी काल (13वी-16वी ईस्वी) से मेल खाती है।लाल बलुए पत्थर से बनी इस बावड़ी की वास्तु संबंधी विशेषताएँ तुग़लक़ और लोदी काल की तरफ़ संकेत कर रहे हैं, लेकिन कहा जाता है कि इस प्राचीन बावली को अग्रहरि एवं अग्रवाल समाज के पूर्वज उग्रसेन ने बनवाया था। इमारत की मुख्य विशेषता है कि यह उत्तर से दक्षिण दिशा में 60 मीटर लम्बी तथा भूतल पर 15 मीटर चौड़ी है। पश्चिम की ओर तीन प्रवेश द्वार युक्त एक मस्जिद है। यह एक ठोस ऊँचे चबूतरे पर किनारों की भूमिगत दालानों से युक्त है। इसके स्थापत्य में 'व्हेल मछली की पीठ के समान' छत, 'चैत्य आकृति' की नक़्क़ाशी युक्त चार खम्बों का संयुक्त स्तम्भ, चाप स्कन्ध में प्रयुक्त पदक अलंकरण इसको विशिष्टता प्रदान करता है।अग्रसेन की बावली दिल्ली का एक लोकप्रिय ऐतिहासिक इमारतों में से एक है। बॉलीवुड की लोकप्रिय फिल्म पीके के कुछ सीन यहां फिल्माए गए थे। इसका कुएं के समान structure है, चारो ओर से सीढ़ियां और बीच में पानी जमा हुआ है।

अग्रसेन की बावली देखने के बाद हम राजघाट गए।

अग्रसेन की बावली

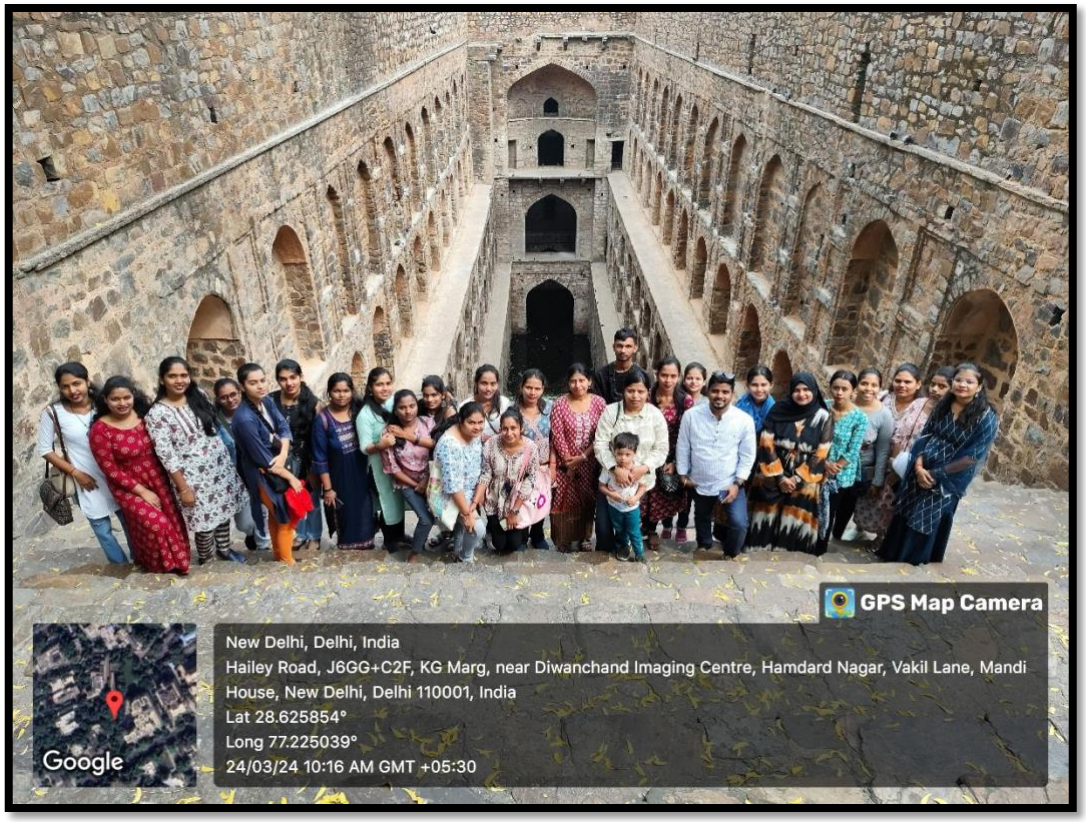

राजघाट संग्रहालय

जामा मस्जिद

लाल किला

राजघाट

दिल्ली में अध्ययन यात्रा के दौरान हम 24 मार्च के दिन हम किसी एक जगह पर गए जिसका नाम राजघाट बताया गया। लेकिन पहले मैं बिल्कुल अनजान थी कि वहा क्या है, वह कौनसी जगह है, परंतु जब हम अंदर गए तब मुझे पता चला कि इस जगह पर हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की समाधि स्थित है। गांधी जी के शांत व्यक्तित्व की तरह ही वह जगह थी। फूल, पौधें, शांत वातावरण, नजर जाए वहा तक हरियाली नजर आ रही थी। तरह- तरह के फूलों से बाग भर गया था।

- **राजघाट महात्मा गांधी का स्मारक**

दिल्ली में यमुना नदी के पश्चिमी किनारे पर महात्मा गांधी जी की समाधि स्थित है। काले संगमरमर से बनी इस समाधि पर उनके अंतिम शब्द “हे राम” उद्धृत किए गए हैं। यह दिल्ली का सबसे लोकप्रिय आकर्षण है और प्रतिदिन हजारों पर्यटकों को अपनी ओर खींचता है। जिसके एक किनारे पर तांबे के कलश में लगातार एक मशाल जलती रहती है। इसके चारों ओर कंकड़युक्त फुटपाथ और हरे-भरे लॉन हैं।

अब यह एक सुन्दर उद्यान का रूप ले चुका है। यहाँ पर सुन्दर फव्वारे और अनेक प्रकार के पेड़ लगे हुए हैं। यहाँ पास ही शांति वन में भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु की समाधि भी है। भारत आने वाले विदेशी उच्चाधिकारी महात्मा गांधी को श्रद्धांजली देने के लिए राजघाट अवश्य आते हैं। यह महात्मा गाँधी का समाधि स्थल है जिसे 31 जनवरी 1948 को उनकी हत्या के उपरान्त बनाया गया था। इस बात की जानकारी मुझे पहली बार वहा जाकर मिली।

राज घाट को किसी विशेष प्रस्तावना की ज़रूरत नहीं है। इस स्थान के महत्व का पता इस बात से चलता है कि भारत आये किसी भी प्रवासी प्रतिनिधि मण्डल को राजघाट आकर पुष्पाँजलि समर्पित करना और महत्मा गाँधी को सम्मान देना अनिवार्य रहता है।

- **राजघाट की वास्तु कला**

स्मारक को “वानु जी भुटा” द्वारा डिज़ाइन किया गया है और स्थापत्य कला को दिवंगत नेता के अनुकरण में ‘सरल’ रखा गया है। हालाँकि निर्माण के उपरान्त स्मारक में कई बदलाव किये जा चुके हैं।समाधि के पास कई पेड़ लगे हुए हैं, जिन पर उन विदेशियों के नाम लिखे हुए हैं, जो राजघाट देखने आए। जैसे कि ब्रिटिश महारानी एलिजाबेथ द्वितीय, पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रेगन, पूर्व आस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री राफ टिडरमैन के नाम यहां देख सकते हो। गांधी जी की समाधि देखने के बाद हम गांधी स्मारक संग्रहालय देखने चले गए। वहा पर हमें संग्रहालय के बारे में जानकारी देने के लिए गाइड आए। उन्होंने हमें गांधी जी के बारे में काफ़ी जानकारी दी। पूरा

संग्रहालय घुमाया और गांधी जी के बारे में जो भी अफवाएं प्रचलित है उन अफवाओं को अप्रमाणित समझाने के लिए कई तर्क बताए। इस संग्रहालय की महत्वपूर्ण विशेषताएं मैंने आगे बताने का प्रयास किया है।

- **गांधी स्मारक संग्रहालय**

एक प्रदर्शनी जिसमें महात्मा गांधी की खून से लथपथ लुंगी और शॉल तथा वह गोली दिखाई गई है जिसने उनकी जान ले ली।

राजघाट में गांधी स्मारक संग्रहालय है, जिसमें गांधी जी के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएं और उनके सर्वोदय आंदोलन को फिल्म द्वारा दिखाया गया है। यह फिल्म प्रत्येक रविवार को 3 बजे हिंदी में और 5 बजे अंग्रेज़ी में दिखाई जाती है। इसमें गांधीजी के जीवन से संबंधित चित्रों, मूर्तियों, पुस्तकों, फिल्मों और अन्य यादगार वस्तुओं के संग्रह के माध्यम से महात्मा गांधी के जीवन और विचारधारा को सुरक्षित रखने का सफ़ल प्रयास किया है। संग्रहालय में गांधीजी के जीवन और कार्यों से संबंधित 35,000 से अधिक दस्तावेजों और पुस्तकों का एक समृद्ध संग्रह है, जिनमें से कुछ स्वयं नेता द्वारा लिखे गए हैं। इसमें उनकी कुछ निजी वस्तुओं, जैसे उनकी धोती, शॉल, चलने की छड़ें, उनके कुछ दांत और यहां तक कि उनकी हत्या के लिए इस्तेमाल की गई गोलियों में से एक के साथ चरखे या चरखे के 23 मॉडल भी प्रदर्शित किए गए हैं। गांधी जी की मृत्यु के बाद उनके प्रेत को जिस नाव से लाया गया था वह और गांधी जी ने इस्तेमाल की गई गाड़ी को भी भी इस संग्रहालय सुरक्षित रखा गया है। संग्रहालय में एक ऑडियो-विजुअल अनुभाग है जहां 75 सीटों वाले सभागार के अंदर गांधीजी के जीवन और कार्य पर फिल्में दिखाई जाती हैं।

यह संग्रहालय महात्मा गांधी के जीवन और सिद्धांतों को प्रदर्शित करता है। इस संग्रहालय का उद्देश्य यह रहा है कि दृश्य कला, तस्वीरों, चित्रों, पांडुलिपियों और उनकी सांसारिक संपत्तियों (अवशेषों) के प्रदर्शन के माध्यम से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवन, कार्य और दर्शन को बढ़ावा देना और प्रचारित करना। इसके अलावा भारत के विभिन्न हिस्सों में स्मारक स्तंभ, पट्टिकाएँ स्थापित करना और कुछ संग्रहालय और पुस्तकालय स्थापित करना। संग्रहालय अनुभाग में विशाल चित्र दीर्घाएँ हैं जो तस्वीरों, कलाकृतियों, चित्रों और उनके अवशेषों में गांधी के जीवन, कार्य और आदर्शों को दर्शाती हैं। साथ ही एक सुव्यवस्थित विशेष पुस्तकालय जिसमें लगभग 40,000 पुस्तकें, पत्रिकाएँ, उनके पत्र-व्यवहार, विश्व शांति और धर्मों पर पुस्तकें हैं। संग्रहालय देखने के बाद मुझे यह समाज में आया की गांधी जी का कितना बड़ा व्यक्तित्व था और आज भी भारतीय के साथ-साथ विदेशी लोग भी उन्हें क्यों याद रखे हुए हैं। मैंने महादेवी वर्मा द्वारा लिखित 'पुण्य स्मरण' संस्मरण पढ़ा जिसमें उन्होंने गांधी जी के व्यक्तित्व पर अपनी स्मृतियां लिखी है। वे कहती हैं कि गांधी जी हमेशा हास्य से परिपूर्ण ओठों से बात करते थे जो अपने फायदे का न सोचकर देश के हित के बारे में सोचते हैं। इसी तरह का व्यक्तित्व मुझे उस गाइड में

झलकने लगा,जिन्होंने एक हर्ष भरी मुस्कुराहट से बिना पैसों की लालच से हमें पूरा संग्रहालय घुमाया और महत्वपूर्ण जानकारी भी प्रदान की। तो यह था हमारे राजघाट की यात्रा का वर्णन।

जामा मस्जिद

राजघाट के उपरांत हम जामा मस्जिद गए।दिल्ली की जामा मस्जिद,पुरानी दिल्ली, भारत की मस्जिद जिसका निर्माण 1650-56 में मुगल सम्राट द्वारा किया गया था। शाहजहाँ,इस्लामी वास्तुकला का एक प्रसिद्ध संरक्षक,जिसका सबसे प्रसिद्ध काम आगरा में ताज महल है।जामा मस्जिद, जो अब भारतीय उपमहाद्वीप की दूसरी सबसे बड़ी मस्जिद है, मुगल वास्तुकला का एक प्रभावशाली उदाहरण भी है।

जामा मस्जिद दिल्ली की प्रमुख मस्जिद है, वह स्थान जहां शहर के मुसलमान पारंपरिक रूप से शुक्रवार की सामुदायिक प्रार्थना के लिए इकट्ठा होते हैं; जामा मस्जिद अरबी में "शुक्रवार मस्जिद" के लिए है। मस्जिद लाल किले के पास है,जो शाहजहाँ की इमारतों में से एक है। जामा मस्जिद और उसका प्रांगण सड़क से 30 कदम से भी अधिक ऊंचे स्थान पर खड़ा है, जिससे मस्जिद के आसपास के क्षेत्र का शानदार दृश्य दिखाई देता है। लंबा नाम, मस्जिद-ए जहां नुमा, का अनुवाद "दुनिया को प्रतिबिंबित करने वाली मस्जिद" या "दुनिया को प्रदर्शित करने वाली मस्जिद" है। मस्जिद का निर्माण लगभग 5,000 श्रमिकों के दल द्वारा किया गया था। मुख्य निर्माण सामग्री लाल बलुआ पत्थर थी , लेकिन कुछ सफेद संगमरमर का भी उपयोग किया गया था।

लाल किला

जामा मस्जिद के उपरांत हम लाल किला देखने गए।लाल किला भारत की राजधानी दिल्ली में स्थित है और पुरानी दिल्ली के शाहजहां के शासनकाल में बनाया गया था।आइए जानते हैं लाल किला का इतिहास क्या है, लाल किला कितने साल पुराना है,लाल किला की खासियत क्या है।

लाल क़िला को एक अनूठी और महत्वपूर्ण संरचना माना जाता है। इसकी खासियत कुछ इस प्रकार है। लाल क़िला भारतीय इतिहास में मुग़ल शासन की महानता का प्रतीक है। यह मुग़ल सम्राट शाहजहां द्वारा बनवाया गया था और भारतीय संस्कृति, कला और वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरणों में से एक है।लाल क़िला का आकार बड़ा और विशाल है।इसमें बहुत सारे भवन, महल, मस्जिदें, बाग़ और दरबार हैं, जो आकर्षक और सुंदरता से भरे हुए हैं।लाल किले की मुख्य दीवारें लाल रंग की होती हैं, जिससे इसे 'लाल क़िला' के नाम से पुकारा जाता है। इसको एकदिवसीय राष्ट्रीय ध्वजारोहण समारोह के दौरान ख़ासतौर से चमकती हैं।लाल किले की दीवारों के रंग को सूर्यास्त और सूर्योदय के समय बदलता है।यह अनूठा और चमकीला दृश्य प्रदान करता है। लाल किले में कई प्रमुख दरवाज़े हैं, जिनमें से दिल्ली दरवाज़ा सबसे अधिक प्रसिद्ध है। यह मक़बरा दरवाज़े के रूप में भी जाना जाता है।लाल क़िला के भव्य दरबार में मुगल सम्राटों ने अपने दरबार का आयोजन किया था।यहां सम्राट अपने अधिकारियों और मंत्रियों के साथ साम्राज्यिक मुद्दों का समाधान करते थे।लाल क़िला भारत के अनेक दर्शनीय स्थलों में से एक है और विभिन्न इतिहासी घटनाओं का साक्षी रहा है।

- **लाल किला का इतिहास**

लाल क़िला की निर्माण की शुरुआत शाहजहां नामक मुग़ल सम्राट ने 17वीं सदी में की थी. इसे बनाने का मुख्य उद्देश्य दिल्ली को राष्ट्रीय राजधानी बनाना था। इसके निर्माण में प्रयुक्त संरचना मुग़ल शैली को प्रतिष्ठित करती है। लाल क़िला का निर्माण 12 मई 1639 को पूर्ण हुआ और शाहजहां ने इसे अपने बेटे दारा शिकोह को उत्तराधिकारी के रूप में सौंपा गया था।लाल क़िला का आकार बड़ा और विशाल है। इसमें बहुत सारे भवन, मस्जिदें, बाग़, महल, और दरबार हैं। इसकी मुख्य दीवारें लाल रंग की हैं, जिससे इसे 'लाल क़िला' के नाम से पुकारा जाता है। इसमें छह प्रमुख दरवाज़े हैं - दिल्ली दरवाज़ा, लाहौर दरवाज़ा, अख़बर दरवाज़ा, बर्ख़ि दरवाज़ा, नोबेल दरवाज़ा, और हुमायूं दरवाज़ा। यह क़िला भारतीय इतिहास में कई महत्वपूर्ण घटनाओं के साक्षी रहा है।15 अगस्त 1947 को भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति के दिन, पंडित जवाहरलाल नेहरू ने यहां से पहले आज़ादी के ज़िक्र किया था। यह एक प्रमुख पर्यटन स्थल है जो देश और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करता है। बता दें लाल क़िला की उम्र 2023 में लगभग 384 साल है। यह मुग़ल सम्राट शाहजहां द्वारा 12 मई 1639 को बनवाया गया था।

सरोजिनी नगर मार्केट

अंत में हम सरोजिनी नगर मार्केट दिल्ली सामान खरीदने गए।सरोजिनी नगर मार्केट दिल्ली (Delhi Sarojini Nagar Market) के सबसे सस्ते बाजारों में जानी जाती है। इस संडे आप अपने दोस्तों या परिवार वालों के साथ यहां खरीदारी करने का प्लान बना सकते हैं। इस मार्केट में आपको सस्ते में जींस, फुटवियर, बैग्स, चश्मे, सब कुछ काफी बजट वाले दाम पर मिल जाएगा।

शॉपिंग पूरी हो जाने के बाद हम वापस अपनी होटल आए। 25 मार्च की सुबह 5 बजे दिल्ली स्टेशन से गोवा जाने के लिए ट्रेन थी। होटल वालों ने हमें स्टेशन पहुंचने की लिए टैक्सी का इंतजाम करवा दिया था। वक्त से पहले ही हम रेलवे स्टेशन पहुंच गए और ट्रेन आ जाने के बाद हम उसमे चढ़कर गोवा आने के लिए रवाना हो गए। ट्रेन का सफ़र काफ़ी अच्छा रहा। 26 मार्च की दोपहर 11 बजे हम गोवा मडगांव रेलवे स्टेशन पर पहुंच गए।

निष्कर्ष

दिल्ली में समृद्ध और अद्वितीय सांस्कृतिक और स्थापत्य विरासत है, जो वास्तविक अखिल भारतीय स्वरूप और सभी के लिए बेजोड़ गंतव्य है। दिल्ली स्मारकों, संग्रहालयों, धार्मिक स्थलों, खरीदारी स्थलों की विस्तृत विविधता और अग्रणी भोजन अनुभवों से लेकर कई पर्यटक आकर्षण प्रदान करता है। दिल्ली जैसे मशहूर शहर में हम गए, वहां की खूबसूरती, मशहूर जगहें देखी, दिल्ली के ऐतिहासिक जगहों पर हम गए। मुगल वास्तुकला को बहुत ही क़रीब से देखा, परखा, मेहसूस किया। जिन जगहों हो हम इतिहास, भूगोल, साहित्य आदि के पुस्तकों में पढ़ रहे थे उसे हमने इस शैक्षणिक यात्रा के दौरान आमने - सामने, रू-बरू बहुत अच्छी तरह से देखा। पूरी यात्रा काफ़ी ज्ञानपूर्ण और मज़ेदार रही। इस अध्ययन यात्रा के सुनियोजन के लिए मैं हिंदी संकाय की विभागाध्यक्ष प्रो. वृषाली मांद्रेकर मैडम, हिंदी संकाय के कार्यक्रम निदेशक प्रो. बिपिन तिवारी सर, हमारे निदेशक शिक्षक प्रो. दीपक वरक सर और प्रो. श्वेता गोवेकर मैडम से धन्यवाद ज्ञापित करना चाहती हूं। वे हमेशा हम सभी छात्रों के लिए विभाग की ओर से नए - नए कार्यक्रम तथा गतिविधियां आयोजित करते रहते हैं। उसीप्रकार उन्होंने इस हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा का आयोजन किया जिससे हम सभी को कुछ नया सीखने का अवसर प्राप्त हुआ। इस अध्ययन यात्रा से मुझे बहुत कुछ नई जानकारी तथा नया अनुभव प्राप्त हुआ।

संगीत वाद्ययंत्र संग्रहालय ललित कला अकादेमी